उत्तराखंड,मध्य-प्रदेश,उत्तर-प्रदेश,राजस्थान,बिहार,महाराष्ट,गुजरात,संघ प्रदेश,से एक साथ प्रसारित

RNI NO - UTTHIN/2018/76731

हिन्दी दैनिक

गांव देहात की खबर,शहर पर भी नजर

दि ग्राम टुडे

सूर्योदय: 05:15 बजे

सूर्यास्त: 06:47 बजे

सोमवार , 17 जुलाई 2023

वर्ष: 05 अंक: 330

पेज: 08, मूल्य: 2 रूपये

Email : thegramtodayeditor@gmail.com

लौकी की अधिक उत्पादन हेतु ले उन्नतशील प्रजातियां..डॉ राम बटुक सिंह

दि ग्राम टुडे, कानपुर। (सूर्यनारायण,रमेश चंद्र सैनी) चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज सब्जी विज्ञान विभाग के प्रभारी अधिकारी डॉ राम बटुक सिंह ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। उन्होने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

Title-code: UPHIN-48963
E-mail: jksingh.hardoi@gmail.com
सत्य का असर
समाचार पत्र
Monday 17th July 2023
jksingh.hardoi@gmail.com
मोबाइल 9956834016
website: satyakaasar.com

पत्रकार जीतेंद्र सिंह पटेल

खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती उत्पादन हेतु लौकी की उन्नतशील प्रजातियां: डॉ राम बटुक सिंह

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज सब्जी विज्ञान विभाग के प्रभारी अधिकारी डॉ राम बटुक सिंह ने *खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती* विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। उन्होने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

कानपुरः लौकी की अधिक उत्पादन हेतु ने उन्नतशील प्रजातियांः डॉ राम बटुक सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज सब्जी विज्ञान विभाग के प्रभारी अधिकारी डॉ राम बटुक सिंह ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। उन्होने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 – 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 – 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो–तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

कृषि और तकनीक का मिलन शोध के साथ होंगे नवाचार

- एचबीटीयू और सीएसजेएमयू से हाथ मिलाएगा सीएसए वि.
- तीनों विश्वविद्यालय के शिक्षक और छात्र मिलकर करेंगे कृषि में शोध

जागरण संवाददाता, कानपुर: कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचार व शोध-अनुसंधान के लिए शहर के तीन बड़े विश्वविद्यालय सीएसए, एचबीटीयू और सीएसजेएमयू एक साथ आने को तैयार हैं। अगले माह तक एमओयू (सहमति पत्र) पर हस्ताक्षर की तैयारी है। तीनों विश्वविद्यालय के शीर्ष अधिकारी व शिक्षक अभी एमओयू के लिए जरूरी सूचना जुटा रहे हैं। विश्वविद्यालयों के कुलपति ने एमओयू को सैद्धांतिक सहमति दी है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आनंद कुमार सिंह ने कृषि और तकनीक के मिलन की पहल की है। कृषि क्षेत्र में ड्रोन तकनीक से लेकर अनेकानेक क्षेत्र हैं जहां इंजीनियरिंग ज्ञान विशेष भूमिका निभाने में सक्षम है। इसके लिए उन्होंने हरकोर्ट बटलर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समशेर सिंह और छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक से बात की है। सीएसए कुलपति ने बताया कि तीनों विश्वविद्यालय साथ जुड़कर यह तय करेंगे कि किन-किन क्षेत्रों में मिलकर एक साथ काम कर सकते हैं। एचबीटीयू और सीएसजेएमयू के पास उच्च स्तर का तकनीकी ज्ञान है। इसका कृषि क्षेत्र में व्यावहारिक प्रयोग समझने की जरूरत है। जब तीनों विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र साथ मिलकर काम करेंगे तो कृषि क्षेत्र में भी नवाचार होगा। उन तकनीकों पर काम होगा जिसकी लोगों को जरूरत है। सीएसजेएमयू के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक ने बताया कि विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ शैक्षिक करार किया जा रहा है, जिसका कृषि क्षेत्र में लाभ मिलेगा। एआइ के प्रयोग से फसल उत्पादन के साथ ही गुणवत्ता नियंत्रण भी संभव है। बायो टेक्नोलाजी और कृषि का संयोग भी फसलों की जीनोमे एडिटिंग में प्रभावकारी होगा।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक : 19 कानपुर, सोमवार 17 जुलाई 2023 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

लौकी की अधिक उत्पादन हेतु ने उन्नतशील प्रजातियां

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में सब्जी विज्ञान विभाग के प्रभारी अधिकारी डॉ राम बटुक सिंह ने खरीफ में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने बताया कि लौकी से विभिन्न प्रकार के व्यंजन जैसे रायता, कोफ्ता,हलवा, खीर इत्यादि बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। उन्होने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 20 जून से 20 जुलाई तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। उन्होंने बताया कि यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।